।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।



।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी

– रचयिता–

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

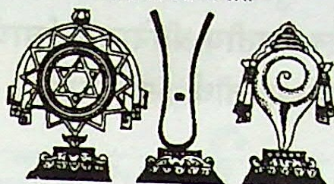
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥



युगलकिशोर भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी

रचयिता--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) पुष्करक्षेत्र

किशनगढ--अजमेर (राजस्थान)

श्रीशरत्पूर्णिमा - महोत्सव

वि० सं० २०६२ श्रीनिम्बार्काब्द ५१००

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

द्वितीयावृत्ति--
दो हजार

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
दश रुपये

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

समर्पण

(१)

श्रीसर्वेश्वर-पदकमल,--पावनकृपाप्रसाद ।
"राधासर्वेश्वरमञ्जरी", अर्पित श्रुति-मर्याद ॥

(२)

न कवित्व न वैदुष्य है, नहि विवेक-अनुराग ।
प्रभु-पदाम्बुजपराभक्ति, हो सदैव सद्भाग ॥

आश्विन शुक्ल शरत्पूर्णिमा-महोत्सव, सोमवार
वि० सं० २०५५
दिनाङ्क ५/१०/९८

समर्पक--
श्रीसर्वेश्वरप्रभुपदाब्जरसभक्तिपिपासु-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

❋ श्रीराधासर्वेश्वरषोडशी ❋

श्रीकृष्णचन्द्र मुकुन्द हरि भज, रासरस--रसिकेश्वरम् ।
वृन्दाविपिन नव-कुंज विहरत, वेणु कर-पंकजधरम् ॥
नव-नित्य-कुंजेश्वरी राधा, परम शोभित सुन्दरम् ।
प्रिय सहचरीवर-वृन्द सेवित, तरणिजा तट संचरम् ॥
मणिमय लकुट करकंज राजत, दिव्य धृत पीताम्बरम् ।
कच-कुटिल श्रीमुखचन्द्र आभा, दरश लालस मुनिवरम्॥
विधि-शिव-पुरन्दर-समाराधित, कोटि काम मनोहरम् ।
सुमयूर-सुन्दर-मौलिधारी, कनक-कुण्डल रुचितरम् ॥
व्रजधाम वसुधा विविध लीला, करत अविरल श्रीधरम् ।
नित करत क्रीडा असुर तारे, कियो धारण गिरिवरम् ॥
आराधना रत रसिक भावुक, भाव पूरण तत्परम् ।
व्रजसुन्दरी नवनीतहारी, धाम महि पावनकरम् ॥
रस-रासलीला-लास्यकारी, विपिनराज निरन्तरम् ।
सच्चिन्मयी व्रज-कुंज-वीथी, सतत गौ-चारणपरम् ॥
रसब्रह्म वृन्दावन विहारी, विश्वबीज परात्परम् ।
"श्रीशरण" वांछत कृपा प्रतिपल, श्रीराधा-सर्वेश्वरम्॥

दिव्यरसभावामृतमयी श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी

भारतीय शास्त्रों में शब्द को ब्रह्म कहा गया है, क्योंकि शब्द और अर्थ काव्य का शरीर एवं रस आत्मा माना गया है । **रसो वै सः** इस उपनिषद् वचन के अनुसार रस ही ब्रह्म है और वह रस ब्रह्म शब्दगत होने से शब्द को भी ब्रह्म कहा गया है ।

रसोपासना में नित्य निरन्तर निरत हमारे परम पूज्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा अपनी सारस्वत समाराधना के अन्तर्गत सुरभारती (संस्कृत) तथा हिन्दी भाषा में जो विविध सरस ग्रन्थों का सर्जन हुआ है, उनमें प्रस्तुत दिव्यरसभावामृतमयी ''श्रीराधासर्वे-श्वर मञ्जरी'' आपश्री की एक अनुपम कृति है । इसका गहन अध्ययन करने से श्रीमद्भागवत का एक दिव्य प्रसङ्ग स्फुरित हो आता है ।

भगवान् श्रीशंकर जगदम्बा पार्वती से कहते हैं--

सत्वं विशुद्धं वसुदेवशब्दितं यदीयते तत्रपुमानपावृतः ।
सत्वे च तस्मिन् भगवान् वासुदेवो ह्यधोक्षजो नमस्त विधीयते ॥

महापुरुषों के तपश्चर्या एवं उपासना से जो अन्तःकरण विशुद्ध (निर्मल) हो जाता है, उसको वसुदेव कहते हैं, क्योंकि उस पवित्र वसुदेव संज्ञक अन्तःकरण में ही भगवान् श्रीकृष्ण प्रकट होकर बिना आवरण के दर्शन प्रदान करते हैं । भगवान् वसुदेव के यहाँ एवं भक्त के

परम पावन निर्मल हृदय में प्रकट होने से उनको वासुदेव कहते हैं। अस्तु।

श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी के दिव्य सरस सजीव प्रसंगों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि परम पूज्य आचार्यश्री **श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी** ग्रन्थ लेखन के समय सरसभाव साम्राज्य में ऐसे निमग्न हो गये हैं कि अपने परम निर्मल अन्तःकरण में श्रीराधामाधव की दिव्य रस माधुरी का जैसा दर्शन और अनुभव हुआ, उसी को शब्द रूप दिया है- "श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी" में।

प्रिया--प्रियतम की सरस रूपमाधुरी एवं अनेक लीला--प्रसंगों के अनेक सजीव भावमय सरस शब्दचित्र अंकित किये गये हैं, उनका वास्तविक वर्णन करने के लिए शब्दों का चयन करना अस्मदादि के शक्ति का विषय नहीं है। फिर भी अपने हृदय के भक्तिभाव सुमन समर्पित करने की यह चेष्टा मात्र है।

श्रीवृन्दावनधाम संवलित श्रीराधामाधव के दिव्य रसमय लीला--प्रसंगों के अतिरिक्त भारत के अनेक महिमामय विषयों का भी अतिसुन्दर जो समावेश **श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी** में हुआ है, वे द्रष्टव्य एवं मननीय है। यथा--तीर्थराज पुष्कर एवं ब्रह्माजी के स्वरूप तथा महिमा का वर्णन पठनीय हैं। लघु-ग्रन्थ में गागर में सागर भरने का सा प्रयास करते हुए धर्म प्रधान भारत का ही शब्दचित्र प्रस्तुत किया गया है--ऐसा प्रतीत होता है। हरिद्वार तथा भगवती पतित पावनी भागीरथी (गंगा) का वर्णन **जय जय गंगे शरण तिहारी** के साथ भारत के चारों कुम्भों का वर्णन--'प्रयाग कुम्भ सरस मनोहर', 'अवन्तिका कुम्भ सुखद है', 'नासिक वसुधा कुम्भ निहारो' इत्यादि शास्त्रीय संगीत के नियमों को ध्यान में रखते हुए जो पदों का सर्जन हुआ, वह संगीत शास्त्र के

मर्मज्ञ विद्वानों के लिए ''श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी'' एक अभिनव संगीत निधि के रूप में भी मानी जायेगी ।

दशरथनन्दन अवधविहारी, जय जय गणपति अति हितकारी इत्यादि पदों द्वारा भगवान् श्रीराम एवं गणपति आदि वैदिक सनातन धर्म सम्बन्धी दिव्य देव विभूतियों का वर्णन करते हुए हमारे सार्वभौम निम्बार्कदर्शन के लोकप्रिय सिद्धान्त का भी संक्षेप में परिचय देने का प्रयास किया गया है । साथ ही अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ का भी सुन्दर वर्णन, **श्रीजयदेव परम समुपासित राधामाधव दर्शन चितहर** इत्यादि शास्त्रीय पदों से हुआ है ।

साररूप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि लघुकाव्य श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी ग्रन्थ में अनेक धार्मिक विषयों का समावेश शास्त्रीय पदों के अन्तर्गत करते हुए गागर में सागर भरने की उक्ति को चरितार्थ किया गया है । श्रद्धालुजन इस ग्रन्थ का स्वाध्याय--गायन कर निश्चय ही निस्सन्देह आनन्दरसानुभूति करेंगे ऐसा हमें दृढ विश्वास है ।

श्रीचरणकमलचञ्चरीक--

दयाशङ्कर शास्त्री

एम. ए. साहित्याचार्य

शिक्षामन्त्री-अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, शिक्षा समिति

श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी में भावसाधना की अभिव्यक्ति

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा रचित ''श्रीराधासर्वेश्वरमञ्जरी'' से विदित होता है कि-- महाराजश्री की रसमयी भक्ति की तदाकार मनोवृत्ति से अजस्र धारा प्रवाहित होती रहती है । महापुरुषों ने जो भक्ति का स्वरूप बताया है वह सर्वाङ्गतया घटित होता है । श्रीमधुसूदन सरस्वतीजी ने भक्ति के विषय में लिखा है कि--

द्रुतस्य भगवद्धर्माद् धारावाहिकतां गता ।
सर्वेशे मनसो वृत्तिर्भक्तिरित्यभिधीयते ।।

पहले तो चित्त का पिघलना जरूरी है, पिघली हुई मनोवृत्ति की मधुरभावधारा धारावाहिक रूप में गंगा धारावत् श्रीसर्वेश्वर प्रभु चिन्तन के रूप में प्रवाहित हो । यही भक्ति का स्वरूप है । मन को इधर नहीं जाने देना है । इसी मनोवृत्ति का फल निम्न पद्य में प्रकट है ।

चञ्चल मन तूँ जप हरि नाम

क्या लिखूँ जिस पद्य को पढता हूँ वहीं वह प्रेममयी भावमयी मधुर साधना देखता हूँ! कहा इतना ही जा सकता है आचार्यश्री की भाव साधना सुतरां सिद्ध है ।

श्रीचरणकमलचञ्चरीक--
हरिशरण उपाध्याय निम्बार्कभूषण
व्याकरण वेदान्ताचार्य (नेपाल वास्तव्य)
पूर्व प्राचार्य-श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय, वृन्दावन

श्रीराधासर्वेश्वरमञ्जरी सौरभ

अनागत-अज्ञात-अनातम-अनातुर-अनाकुल-अनवस्कर-अनवद्य-अनवग्रह-अनल्प-अनर्घ-अनघ-श्रीसर्वसमर्थ-सर्व-स्वतन्त्र-षड्गुणसम्पन्न- श्रीहंस-सनकादिसंसेव्य प्राणेश्वर-परमेश्वर-विपिनेश्वर-रसिकेश्वर-सकलेश्वर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में संलग्न अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा रचित ग्रन्थ--काव्यांश--विभिन्न प्रान्तों के विद्या-रसिकों को पाठ्यक्रम एवं आयोजनों द्वारा परिचित होते रहे हैं । राजस्थान संस्कृत अकादमी ने तो आपके प्रकाण्ड पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ लेखन पर उच्चतम सम्मान प्रदान कर अपने को गौरवान्वित किया है । अभिनव हिन्दी भाषा में अभी आपने एक कृति साहित्य जगत् को प्रदान की है जिसका नाम है--**श्रीराधासर्वेश्वरमञ्जरी** ।

इस कृति की भाषा--शैली--छन्द एवं भाव गाम्भीर्य की अमिट छाप पाठक हृदय पर अवश्य पड़ेगी । भक्ति के सरोवर में अवगाहन कराने में यह बेजोड़ है । यथा--

भज श्रीराधा भज श्रीसर्वेश्वर ।
जय जय जय हो जय रसिकेश्वर ।।

भजन पढ़ें या पद सभी में जीवात्मा को सचेत किया है। यथा-

कृपा करो हे श्रीसर्वेश्वर ।
जन्म-जन्म से भटकत हमको जीवन बीता जाय निरन्तर ।।

कहीं वृन्दावन के दर्शन की भावना जाग्रत की है, कहीं प्रभु के दर्शन की छटपटाहट ।

वर्तमान युग के व्यसनों से बचने के लिए भी आपने सदुपदेश देते हुए लिखा है--

जर्दा-बीड़ी-सिगरेट, तम्बाखू घातक सिद्ध ।
धूम्रपान वर्जित सदा, शरण शास्त्र प्रसिद्ध ॥

गुटका छाया हुआ है आपने तो उससे सम्भावित कैंसर रोग की भी चर्चा की है--

गुटका आदि अखाद्य हैं, विविध पेय को छोड़ ।
कैंसर आदिक रोग सब, प्रकट शरण मनमोड़ ॥

श्री "श्रीजी" महाराज की यह अनुपम कृति भटकते मानवों-महिलाओं--युवकों का मार्गदर्शन करेगी । ऐसी महनीय कृति का मैं अभिनन्दन करता हूँ और सर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना है कि महाराजश्री निरन्तर रसधारा से सबको तृप्त करते रहें ।

श्रीमच्चरणचञ्चरीक--
डा० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी निम्बार्कभूषण
लब्धस्वर्णपदक--सप्ताचार्य
एम. ए., पी. एच. डी., डी. लिट्
पूर्व-रीडर, अध्यक्ष सं० विभाग, प्राच्यदर्शन महाविद्यालय
वृन्दावन (मथुरा)

विनम्र निवेदन

प्रस्तुत लघुकाय पुस्तिका एक सरस भजन संग्रह है । इसमें श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आराध्य भगवान् श्रीराधा-सर्वेश्वर प्रभु के गुण, लीला, चरित्र किंवा आनन्द-कन्द व्रज-विहारी युगल-सरकार की बाल, कौमार और कैशोर लीलाओं का प्रकीर्णक गान किया गया है । इन पदों की भाव-भाषा सरस और स्वाभाविक रूप से सरल है । संकीर्तन की अनेकानेक ध्वनियों में संयोजित नामावली के गीत और उनकी तर्जे सहज ग्राह्य तो है ही, गान करने में भी सरल है, अतएव जन सामान्य के लिए भी गेय है ।

लोक कल्याण एवं जनहित की भावना से प्रेरित संत-हृदय का यह वरदान विश्व मानव के अन्तर्हृदय में भक्ति की स्थापना का एक स्तुत्य प्रयास है। इस **श्रीराधासर्वेश्वरमञ्जरी** के प्रणेता अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज अपने सम्प्रदाय और साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् हैं। आपने लोक हित को दृष्टि पथ पर रखकर इस पुस्तिका की भाषा को सरल से सरल और सुबोध बनाकर एवं पाण्डित्य प्रदर्शन से विरत होकर सरल शब्दों में भक्ति रस में डूबोकर इसकी रचना की है । जिसका लक्ष्य है जन-जन में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की भक्ति की स्थापना पूर्वक मानव जीवन का साफल्य ।

अन्त में मेरी मङ्गल-कामना है कि आचार्यवर्य्य का यह आशीर्वाद-''श्रीराधासर्वेश्वरमञ्जरी'' भक्तजनों के हृदय, मन एवं प्राणों को अपनी प्रेम-भक्ति की सुवास से परिपूरित करदे और सर्वेश्वर प्रभु के नाम-लीलामृत में अवगाहन पूर्वक परितृप्त करके तन्मय कर दे ।

विनयावनत--*स्वामी हितदास*

श्रीहिताश्रम सत्संग भूमि, वृन्दावन

✻ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ✻

श्रीसर्वेश्वर-कृपाप्रसाद ही सर्वोपरि है

अपने आराध्य की उपासना-परम्परा में सङ्गीतमय-पद्यों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। उन सुललित सरस पद्यों को लय पूर्वक सङ्गीत के साथ तन्मनस्क होकर प्रगायन करके अपने परमेष्ट उपास्य के मंगल स्वरूप का चिन्तन-स्मरण किया जाता है। रसिक भावुकजन उन मधुर पद्यों को अपने अति कमनीय कण्ठ से भावविभोर होकर विविध मांगलिक मधुर वाद्यों से परिगायन कर तन्मय हो जाते हैं। अनन्तकृपार्णव अखिलान्तरात्मा श्रीप्रभु भी देवर्षिवर्य श्रीनारदजी को किये गये इस उपदेश के अनुसार--

नाऽहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ! ॥

हे देवर्षिवर्य नारद ! न तो मैं वैकुण्ठादि धाम में निवास करता हूँ और नहीं योगीजनों के हृदयस्थल में, अर्थात् मैं वहीं पर निवास करता हूँ जहाँ मेरे प्रपन्न रसिक-भक्त तन्मनस्क होकर मेरा गान करते हैं, मुझे स्मरण करते हैं, मैं उनके मध्य में ही आकर निवास करता हूँ।

वस्तुतः सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु इतने कृपालु--दयालु हैं कि वे अपने परमभागवत अनन्य--भक्तों के मध्य में पधार कर

उनके कलकण्ठ से निर्झरित दिव्य भावभरित रसपूर्ण श्रीहरि नाम--संकीर्तन का श्रवण कर अतीव प्रमुदित रूप से वहीं निवास करते हैं जो उन सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण की असीम लोकोत्तर महामहिमा का परमाद्भुत दिव्यतम स्वरूप है । वे स्वाभाविक कृपासिन्धु अकारणकरुणावरुणालय हैं । श्रीहरि का यह मङ्गलमय स्वरूप इस निम्न वचन से और स्पष्ट हो जाता है,--

कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः ।
जलं भित्त्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम् ॥

कृष्ण-कृष्ण-कृष्ण कहकर जो मुझे नित्य नियमित रूप से स्मरण करता है उसे मैं जिस प्रकार अगाध जल के निम्न तल भाग से कमल पुष्प ऊपर उठकर जल से वहिर्गत हो जाता है तद्वत् मैं उस भक्त का घोर-नरक से उद्धार कर देता हूँ ।

परम कृपामय श्रीहरि के अनन्य रसिक भक्त भी विविधरूप से उन्हीं सर्वेश्वर का ध्यान, गान, अनुस्मरण आदि करके परम आनन्दित होते हैं । श्रीप्रभु की सतत सेवा अपने मङ्गल--पद्यों के स्तवन से उन्हीं के अनवरत चिन्तन में तत्पर रहते हैं । श्रीमद्‌भागवत के इस वचनानुसार उनकी समग्र क्रियायें चेष्टायें श्रीभगवन्मय बन जाती है, यथा--

वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां
हस्तौ च कर्मसु मनस्तव पादयो र्नः ।
स्मृत्यां शिरस्तव निवास जगत्प्रणामे
दृष्टिः सतां दर्शनेऽस्तु भवत्तनूनाम् ॥

वाणी आप श्रीप्रभु के दिव्यगुणगण वर्णन में, कर्ण (कान) कथा श्रवण में, हस्त (हाथ) अतीव पावन सेवा में, मन--श्री

चरणकमल चिन्तन में, यह शिर-समस्त जगत् आप से परिव्याप्त है अतः सर्वत्र आपको प्रणाम करने में, दृष्टि-उत्तमश्लोक सन्त महापुरुष जो आपके ही मङ्गल स्वरूप में स्थित हैं उनके सुभग दर्शन में मेरी पवित्र भावना सुस्थिर रहे, हे करुणार्णव प्रभो ! ऐसा परम अनुग्रह करें ।

इस प्रकार महाभागवत भगवद्भक्तों की दिव्य उत्कण्ठा प्रतिपल बनी रहती है । इसीलिये ये रसिक भगवज्जन अपने पवित्रान्तःकरण से निर्झरित भावों को सुमधुर पद्यमाला के रूप में सरस सर्जन कर उसे अपने कमनीय--कण्ठ से प्रगायन कर दिव्य रसानुभूति करते हैं । इसी एकमात्र आधार पर **श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी** की सहज भाव में लघु-कलेवर स्वरूप में अभिव्यक्ति हुई जो रसिक भावुकों के समक्ष प्रस्तुत है । यद्यपि वर्ष-चतुष्टय से शारीरिक शल्यक्रियाजन्य कष्टानुभूति अनवरत रहती है तथापि श्रीसर्वेश्वर राधामाधव प्रभु के अहैतुक--अनुग्रह से यथां-कथञ्चित् जीवन निर्वाह तो चल ही रहा है । किसी भी विधा से व्याज से अनन्ताचिन्त्यसौन्दर्यस्वरूप उन श्रीहरि का अपने अन्तर्मानस में कुछ चिन्तन--स्मरण हो जाय यह क्षणभंगुर जीवन चरितार्थ हो जाय और इसमें भी श्रीसर्वेश्वर कृपा--प्रसाद ही सर्वोपरि है । यदि इस प्रस्तुत-पुस्तिका के पद्यों से भावुकजन यत्किञ्चित् भी लाभान्वित हुए तो अतीव सुन्दर है ।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्रीराधासर्वेश्वर मञ्जरी की अकारादि क्रम से

* पद--सूची *



❊ दोहा --सूची ❊



* श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज
विरचित--

श्रीराधासर्वेश्वर मंजरी

सर्वेश्वर प्रभु वन्दना, राधामाधव ध्यान ।
श्रीहंस भगवद्-रूप को, प्रणमत रस-आधान ॥
सनन्दनादि-नारदमुनि, निम्बारक-भगवान ।
पुनि-पुनि मनसा नमन कर, श्रीमद्-गुरुवर ध्यान ॥
इनकी कृपा लव मात्र से, यह लघु-ग्रन्थ पुनीत ।
''राधासर्वेश्वरमञ्जरी'' अवशीलन प्रभु-प्रीत ॥

(१)

भज श्रीराधा भज सर्वेश्वर ।
जय जय जय हो जय रसिकेश्वर ॥
तन्मय होकर इनको ध्यावो, निज मानस हरि रस वरसावो ।
बोलो भाव भर श्रीरासेश्वर ॥
निश्चय जीवन परम सफल है, नाम लेत ही मन निर्मल है ।
सतत निहारो श्रीविपिनेश्वर ॥

पुलकित होकर जय-जय राधे, मधुर-कण्ठ से बोलो राधे ।
प्रमुदित आवत श्रीकुंजेश्वर ॥
अपने तन को प्रभु-सेवा में, चञ्चल-मन को हरि-चिन्तन में ।
तुरत लगादो भजो व्रजेश्वर ॥
श्रीवृन्दावन नव कुंजन-वन, विहरत राधा सेवित सखिजन ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर ॥

(२)

झटपट रट नित श्रीसर्वेश्वर ।
जीवन सरवस मूल मन्त्र है, हट भव-विषयन भज मुरलीधर ॥
यह जग कण्टक अति बाधक है, तज वैभव सब हरि अन्तर धर ।
इत उत भटकत समय जात है, काल निकटतम काटत चक्कर ॥
भला इसीमें राधामाधव, सर्वेश्वर शुभ नाम लिया कर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, निश्चल पावै प्रियसुख सुन्दर ॥

(३)

रसना रट श्रीराधा राधा ।
जिनके मंगल नाम लेत ही, तुरत मिटेगी भव-वन-बाधा ॥
कृपामयी वृषभानुसुताश्री, रस वरषाती परम--अगाधा ।
रसिक-भक्त जो पदसरोजरज, शिर धारत ही शुभफल साधा ॥
कुंजविहारीश्रीसर्वेश्वर, कुंजन विहरत उचरत राधा ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, रटो निरन्तर राधा-राधा ॥

(४)

कृपा करो हे श्रीसर्वेश्वर ।
जन्म-जन्म से भटकत हमको, जीवन बीता जाय निरन्तर ॥
भव-सागर बिच गोता खावत, आश्रय वांछत सकल चराचर ।
कबतक लेंगे परीक्षा भगवन्,कलि-कलुषित हम तव पद-किंकर॥
देर करो मत सहज कृपा से, तुरत उबारो हे पातकहर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, हे परिपालक हे परमेश्वर ॥

(५)

चञ्चल मन तूं जप हरि नाम ।
नाम जपत ही सारे संकट, रोग-शोक का तुरत विराम ॥
निज मानस में अतुल शान्ति की, निर्मल धारा सुख अविराम ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, हर पल श्रीहरि भज निष्काम ॥

(६)

श्रीवृन्दावन दरश मनोहर ।
जहाँ बहत श्रीयमुना धारा, निर्मल पावन अतिशय सुन्दर ॥
युगललाल श्रीराधामाधव, शोभित कुञ्जन बिच सखि परिकर।
शुक-पिक-केकी करत मधुर धुनि,चातक चहुँदिशि गुञ्जत मधुकर
शोभित सुरभित ललित लता-तरु, हरित धरा शुभ-सुभग सरोवर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीवन वांछत प्रतिपल अन्तर ॥

(७)

चलो चलो वृन्दावन धाम ।
कुंजविहारी निकुंजवन में, विहरत राधा सह अविराम ।।
ललिता-हितु-श्रीहरिप्रियादिक, परिसेवित हैं परमललाम ।
महामुदित हो क्रीडत कुंजन, केलिकलानिधि श्यामाश्याम ।
रस वरषत है कुंज-कुंज में, विलसत सखिजन श्रीव्रजवाम ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दरश समीहा हो निष्काम ।।

(८)

नवल कुंज में युगलकिशोर ।
विहरत पल-पल राधामोहन, पुलकित अतिशयभावविभोर ।।
लीला विलसत ललित नवलगति, सुमनगुच्छकर शुभ-शिरमोर ।
युगललाल की शोभा लखि-लखि, सखिजन हरषित लेत हिलोर ।।
कुंज-कुंज प्रति कुंज-कुंज में, विचरत राधाकृष्णचितचोर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय जय जय हो करत पिक-सोर ।।

(९)

मोर कुटी-वन नाचत मोर ।
प्रिया राधिका मधुर भाव लखि, बन गये मोर श्रीकुंजकिशोर ।।
वरसाना-गिरि-गह्वर-वन में, परमललित-गति नर्तत भोर ।
विविध विहगकुल नवल-मोर प्रिय, दरश हरष कर मचावत सोर ।।
ललितादिकसखि दै-दै ताली, अति हरषाती युगलकर जोर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, परम मनोहर रसिक चितचोर ।।

(१०)

कृष्णचन्द्रश्री-नवघनसुन्दर ।
श्रीवृन्दावन निर्मल अवनी, अविरल विहरत कृपादृष्टिकर ॥
वृषभानुसुताश्रीप्रियाकिशोरी,--कृपाभिलाषी श्रीवंशीधर ।
रासविहारी रसरासेश्वर, कलितकुटिलकच कामदर्पहर ॥
मोरमुकुटधर कनकलकुटकर, शोभित यमुना दिव्य पुलिन पर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, व्रजजीवनधन सखिप्राणेश्वर ॥

(११)

भजो रे भजो श्रीसर्वेश्वर ।
अपने मन को लगादो इनमें, मधुर कण्ठ से नाम लिया कर ॥
आधार यही बस सार यही, इन श्रीप्रभु का शुभ ध्यान धर ।
जोर-जोर से नाम बोलकर, हाथ उठावो मधुर भाव भर ॥
कृपा करेंगे सहज कृपामय, वे हैं अतिशय करुणासागर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, शरणागत हो फिर क्या चक्कर ॥

(१२)

सत्पुरुषों का शुभ सग करो ।
इससे जीवन सफल होत हैं, भवसागर से तुम सहज तरो ॥
सत्सङ्गति बिन कालचक्र में, चक्कर काटो पुनि जनम-मरो ।
सर्वेश्वर श्रीहरि की पूजा, गुरुचरणों में नत शरण परो ॥
अहं भाव को दूर छोड़कर, प्रभु भगति-भाव निज हृदय भरो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, मंगल निश्चय हरि ध्यान धरो ॥

(१३)

माखन चोरी करैं गोपाल ।
सखा संग में साथ लिये हैं, घुस गये गोपी-घर व्रजलाल ॥
मटकी फोडी माखन खायो, खुद अपने संग मिलि सब ग्वाल ।
धीरे-धीरे खूब लुटायो, माखन--मिश्री भर--भर थाल ॥
सुख से सोई गोपी मुख पर, माखन लेप्यो यशोदाबाल ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, निज चित ध्यावो गोधनपाल ॥

(१४)

सब तज चल श्रीव्रजवृन्दावन ।
परम ललित अति सरस मनोहर, शोभित मुक्ता-मणिमय काञ्चन ॥
राधामोहन केलि कुञ्जवन, वृन्दा-वृन्द - दल सुरभित रसघन ।
ठोर-ठोर प्रिय सुभग सरोवर, बिच-बिच विलसत पङ्कज कलियन ॥
प्रियालालश्री विहरत कुञ्जन, चारु-चमर-कर सेवित सखिजन ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह वृन्दावन युगल--रसिक धन ॥

(१५)

प्रीति करो प्रिय श्रीप्रियालाल ।
श्रीप्रभु अतिशय परम दयामय, कण्ठ सुशोभित ललित वनमाल ॥
वेणु अधर धर मधुर वजावत, पुलकित पुनि२ सकल व्रजबाल ।
कुञ्जन--वन बिच सखिजन सेवित,
प्रमुदित पावत विविध फल--थाल ॥
अनुपम शोभा युगललाल की, लखि-लखि सुरगण परम निहाल ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, गुणिजन गावत सरस गुण-जाल ॥

(१६)

धावत आवत माखन चोर ।
व्रजगोपिन घर लै दधि-माखन, खायो-खवायो गोपगण-मोर ॥
चपल सखाप्रिय वेणु-लकुटकर, यशोदानन्दन नवलकिशोर ।
मोर-पिच्छधर श्रीमुखमण्डल, व्रजगोपीजन-मटकी-फोर ॥
श्रीराधाचितचोर मुरारी, सहज पछारत कंस-कठोर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दरशन वांछत भाव विभोर ॥

(१७)

हे गोविन्द ! दीनबन्धो !, सतत चरन शरन है ।
हे रासेश ! शान्तिसिन्धो !, भुवन-जलधि मगन है ॥
हे कृपामय ! हो अनुग्रह, ध्रुव भवोदधि तरन है ।
जगत कण्टक विविध बाधा, व्यथित जनम-मरन है ॥
हे हरे ! तव कृपापिपासु, चरण-शरण परन है ।
शरण राधासर्वेश्वर श्री, युगल मञ्जुल-भजन है ॥

(१८)

झट-पट बोलो जय जय राधे, हाथ उठाकर जय जय राधे ।
मधुर कण्ठ से जय जय राधे, अन्तर्मानिस जय जय राधे ॥
उच्चस्वर से जय जय राधे, अश्रुपूरित जय जय राधे ।
राधामाधव जय जय राधे, श्रीसर्वेश्वर जय जय राधे ॥
रासविहारी जय जय राधे, कुंजविहारी जय जय राधे ।
श्रीवृन्दावन जय जय राधे, कुंज-कुंज में जय जय राधे ॥

यमुना तट पर जय जय राधे, कोकिल कूजत जय जय राधे ।
श्रीवरसाना जय जय राधे, व्रजमण्डल में जय जय राधे ।।
भारतवसुधा जय जय राधे, नभ-मण्डल में जय जय राधे ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सखिजन उचरत जय जय राधे ।।

(१९)

सर्वेश्वर की जय जय जय हो, जिन महिमा परम अपार है ।
सनकादिक--परिसेवित हैं, परिविदित सकल संसार है ।।
गुण गावो प्रतिपल श्रीप्रभु का, नर जीवन यह रस-सार है ।
ध्रुव सुख पावो अनुपम सुन्दर, अन्त भवाम्बुधि निस्तार है ।।
अविरल सर्वेश्वर को रटहि, बहहि सदा हिय रस-धार है ।
राधासर्वेश्वरशरणागत, तब सकल तपन-परिहार है ।।

(२०)

अविचल भजले श्रीसर्वेश्वर ।
जिनकी अनुपम सहज कृपा से, ध्रुव-पद पावै प्रिय श्रेयस्कर ।।
जन्म-जन्म के पाप-ताप सब, विलय विनिश्चय भवबन्धनहर ।
वे हैं दयालु जगन्नियन्ता, घट-घट व्यापक अचल कृपाकर ।।
व्रजजनजीवन रसिक-परमधन, वेणु बजावत वंशीवट-तर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सदा उपासत सन्त-रसिकवर ।।

(२१)

श्रीनिम्बारकतीर्थ मनोहर ।
जहाँ सुशोभित श्रीसनकादिक,-परिसेवित हैं श्रीसर्वेश्वर ।।

सुकवि जयदेव परम उपासित,--राधामाधव दरशन चितहर ।
जहाँ जगद्गुरु श्रीनिम्बारक,--श्रीआचारज--परशुरामवर ॥
श्रीनालाजी शुभ चरणामृत, प्रभु-प्रसाद प्रिय अतिशय सुन्दर ।
पूर्वाचारज सुभग समाधी, श्रीनिम्बारकपीठ उच्चतर ॥
श्रीगो--सेवा शिक्षा--स्थल है, श्रीनिम्बारकतीर्थ -- सरोवर ।
सन्त-सुधीजन-अतिथि सेवा, सुन्दर औषधि-दान अधिकतर ॥
करत वेद-धुनि वटुक शान्त प्रिय, विविध देव-गृह वापी प्रियकर।
कोकिल-चातक-मोर करत रव, चहुँदिशि नाना मंजुल तरुवर ॥
साभ्रमती अति पावन--सलिला, पर्वतमाला निर्झर झर--झर ।
श्रीसर्वेश्वर--तुलसी--चन्दन, हवनकुण्ड की शोभा शुभतर ॥
राधामाधव--मन्दिर सुन्दर, यज्ञस्थल की छटा निरन्तर ।
कृष्ण-अष्टमी-नन्द-महोत्सव, महासम्मेलन अतीव शुभकर ॥
अगणित भावुक भक्तजन आवत, पीठ-भूमि पर बाहन भर-भर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय जय जय हो श्रीतीर्थेश्वर ॥

(२२)

माखन चोर लियो घनश्याम ।
दौड़ी--दौड़ी गोपी आई, मात--यशोदा निकट शुभ--धाम ॥
झटपट बोली तेरो ढोटा, माखन चोर लियो निष्काम ।
ग्वाल-बाल संग लेकर आते, कौतुक प्रिय हैं चपल अविराम ॥
तेरे लाल की शोभा दरश हम,-मन्त्रमुग्ध वह परम ललाम ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दर्शन--उत्सुक व्रजजन--वाम ॥

(२३)

आलस तजि हरि-नाम सुमरिये ।
तन्मय होकर शुद्ध-भाव से, राधामाधव अविचल भजिये ॥
जगत--कर्म सब जीवन--बन्धन, उनसे हरपल हटकर रहिये ।
श्रीहरि-मन्दिर नित्य दरश कर, धेनु-साधुजन सेवा करिये ॥
दुर्लभ अवसर सहज जात है, प्रभु-चिन्तन कर सुख संचरिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह भव-सागर सहज हि तरिये ॥

(२४)

रामललाप्रभु प्रतिपल भजिये ।
जनकसुता प्रियवल्लभ राघव, अतिमञ्जुल निज अन्तर धरिये ॥
धनुष-वाण-कर शोभित सुन्दर, श्रीसरयू-तट चिन्तन करिये ।
मन्द-मन्द गति अवधपुरी-पथ, अद्भुत विहरत दर्शन लहिये ॥
अम्बुजलोचन श्रीमुखपंकज, मुनिजन-वन्दित सतत दरशिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अविरल सीताराम उचरिये ॥

(२५)

श्रीगङ्गा प्रिय दर्शन करिये ।
हरिद्वार शुभ पावन धरणी, श्रीगङ्गोदक पातक हरिये ॥
ब्रह्मकुण्ड की महिमा अनुपम, कर मार्जन अति शान्ति विलसिये ।
विविध सुभग-वन चितहर शोभा, अवलोकन कर हृदय सरसिये ॥
सन्त-दरश का सुन्दर अवसर, पाकर इसको परम हरषिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, गङ्गाजल हित सतत तरसिये ॥

(२६)

हरिद्वार श्रीगङ्गानगरी ।
भारत उत्तर क्षेत्र सुशोभित, शुभ श्रीगङ्गा हिमशैल झरी ॥
सुरगण-मुनिजन सदा सुसेवित, शास्त्र-निरूपित हरिभक्ति भरी।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रतिपल प्रणमत वन-वन-डगरी ॥

(२७)

जय जय गङ्गे ! शरण तिहारी ।
दिव्य हिमालय कल२ ध्वनि युत, प्रवहति अविरल सुन्दर वारी ॥
भगवच्चरणनलिनयुगलश्री, पावन - उद्भव - मङ्गलकारी ।
कोटि - कोटि जन-तापवारिणी, भारतवसुधा रस-संचारी ॥
कृपादृष्टि शुभ मोक्षदायिनी, सुर-मुनि वन्दित कल्मषहारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीगङ्गातट दरश विहारी ॥

(२८)

हरिद्वार शुभ कुम्भपर्व है ।
जहाँ बहत श्रीगङ्गा धारा, दर्शन कर अति हृदय गर्व है ॥
सन्त-वचन प्रिय हरिगुण गाथा, चितहर जीवन सार सर्व है ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह अभिवांछा कोटि खर्व है ॥

(२९)

प्रयाग कुम्भ शुभ सरस मनोहर ।
सरस्वती--श्रीगङ्गा--यमुना,- -त्रिवेणी--सङ्गम परमपुण्यकर ॥

महाकुम्भ पर विविध सन्तजन, अगणित भावुक आते वहुतर ।
सकल तीर्थ भी तीर्थराज में, पुलकित आवत भक्तिभाव भर ॥
वेणीमाधव--भरद्वाज--मुनि,-अक्षयवट तरु दर्शन सुन्दर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, संगम--मार्जन सकल--तापहर ॥

(३०)

अवन्तिका शुभ कुम्भ सुखद है ।
क्षिप्रा-तट पर अतिशय शोभित, उज्जयनीश्री महकालेश्वर ॥
साधु-विप्रजन-भावुक जनता, विविध जगद्गुरु परम सुधीवर ।
विपुल रूप में दान-पुण्य कर, प्रमुदित होते सब नारी-नर ॥
देववृन्द भी कुम्भकाल में, हर्षित आवत नाचत किन्नर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीक्षिप्रा अति प्रिय-पय अघहर ॥

(३१)

नासिक-वसुधा कुम्भ निहारो ।
गोदावरि-तट परम सुशोभित, पञ्चवटी श्री सदावधारो ॥
रामघाट अतिशोभा अनुपम, सुभग तपोवन अतिशय प्यारो ।
त्रयम्बकेश्वर दर्शन पावन, महा-मुनीश्वर वचन विचारो ॥
ललित-द्रुमावलि उपवन सोहत, खग-रव-गुंजित सुभग सहारो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, साधु--संग हिय दिव्य उजारो ॥

(३२)

दशरथनन्दन अवधविहारी ।
चित्रकूट की रम्य भूमि पर, विहरत रघुवर परम सुखकारी ॥

लखनलाल संग सेवारत हैं, जय रत हनुमत रस संचारी ।
दिव्यचापकर मुनि आराधित, वन-वन विचरत मंगलकारी ॥
श्रीमुखपंकज अनुपम छवि पर, कोटि-शरण विधु जय वलिहारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दर्शन आतुर सुर--नर--नारी ॥

(३३)

जय जय गणपति अतिहितकारी ।
सकल देवगण नमन करत हैं, मंगलविग्रह विघननिवारी ॥
सदा--सर्वदा मुदित चित्त से, परम कृपामय सुख संचारी ।
मंगल-मोदक श्रीकर शोभित, अभय प्रदाता वरद विहारी ॥
मंगल-अवसर मंगल अभिरत, सतत भजो इन सर्वाधारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, महा--गजानन शरण तिहारी ॥

(३४)

जयति सदा जय श्रीशिवशंकर ।
श्रीकर-डमरू त्रिशूल-शोभा, गिरिजा सह नित शोभित सुन्दर ॥
दिव्य हिमालय सतत विराजत, कनकसुमनप्रिय भुजगमालधर ।
कैलाश धरा धाम सुशोभित, मुनिगण-सेवित शरण-तापहर ॥
अद्भुत ताण्डव--नृत्य परमपटु, विल्वपत्रधर सेव्य सुरासुर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुनि--पुनि वन्दन विधु--गंगाधर ॥

(३५)

तीर्थगुरुवर पावन पुष्कर ।
सतत जहाँ शुभ श्रीब्रह्माजी, परिसेवित हैं सुर--नर--किन्नर ॥

श्रीसावित्री-पापमोचनी,--वामदेव त्रषि-गुफा सुभगतर ।
विश्वामित्र-अगस्त्य ऋषीश्वर, करी तपस्या घोर निरन्तर ॥
पर्वतमाला नाग-शिरोमणि, पुष्कर निर्मल नीर मनोहर ।
मीन-मकर अरु कच्छप जलचर, परिपूरित हैं अतिशय सुन्दर ॥
हंसप्रभु अवतार--धरा है, श्रीनिम्बारक राजत परिकर ।
गुफा--समाधी--परमाचारज, परशुरामश्रीजगदगुरुवर ॥
परशुरामगुरु ठाकुरमन्दिर, राजत मीरां निज प्रभु गिरिधर ।
अटमटेश्वर-गोमुख-दर्शन, पचकुण्डादिक दरश तापहर ॥
गऊघाट अरु ब्रह्मघाट प्रिय, बराह मन्दिर दर्शन रुचिकर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय श्रीपुष्कर बोलो स्वर भर ॥

(३६)

श्रीब्रह्मा के दर्शन करिये ।
सुभग चतुर्मुख परिशोभित हैं, जगत प्रणेता शरण पकरिये ॥
वेद--ऋचा अति मधुर घोष रव, पुष्कर वसुधा मधुर स्वर भरिये ।
ऋषि-मुनि अभिनमन करत हैं, दर्शन कर विधि अन्तर धरिये ॥
अभिवांछित फल पावत भावुक, जय जय बोलत नाम उचरिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीवरदाता कलमष हरिये ॥

(३७)

श्रीतुलसी नित अभिनमन करो ।
श्रीहरि को यह अतिशय प्रिय है, पूजन कर-कर शरण परो ॥

शालगराम सुपावन प्रतिमा, दल-अर्पण कर भवसिन्धु तरो ।
विविध रोग अभिशमन होत हैं, प्रणति भाव भर हरि ध्यान धरो ॥
त्रिविधताप-अघ सहज निवारण, होवत निश्चय निर्भय विचरो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, परम विकटतम संकट निवरो ॥

(३८)

श्रीगुरु पावन पदाम्बुज परिये ।
जिन चरणाश्रित साधकजन मन, जगत-विघातक पातक टरिये ॥
अतिशुभकारी श्रीवचनामृत, परिपालन कर भव निस्तरिये ।
अहं भाव तजि शरणागत हो, दैन्यभाव को चित अवधरिये ॥
गुरु-कृपा अवलम्ब प्रबल है, सेवा उनकी निश्चय करिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जीवन अपना सफल सुमरिये ॥

(३९)

कुंजकिशोरी कंचनसारी, कृष्णपियारी श्रीराधा ।
सखि आराध्या सखिपरिपूज्या, सखि समुपास्या श्रीराधा ॥
विपिनविहारिणी वनसंचारिणी, वेणिधारिणी श्रीराधा ।
रास--रसमधुरा लीलाचतुरा, रास--आतुरा श्रीराधा ॥
रससंचारा रसअवधारा, रसविस्तारा श्रीराधा ।
अद्भुतरूपा अमितअनूपा, आनन्दभूपा श्रीराधा ॥
जय जय श्यामा जय अभिरामा, जय रसधामा श्रीराधा ।
"शरण" कृपामयी सदा दयामयी, सर्वेश्वरमयी श्रीराधा ॥

(४०)

कुंज-कुंज गलियाँ कुंज-कुंज सखियाँ ।
मंजु-कंज अखियाँ जय जय राधा ॥
श्रीवरसाना विहरत प्रतिपल, ललित कराम्बुज विलसत अंचल,
अनुपम शोभा जय जय राधा ।
गहवर वन में सखि संग राधा, केलि करत प्रिय परम अगाधा,
सुभग स्वरूपा जय जय राधा ॥
नव-पट शोभित अतिसुकुमारी, चन्दन-चर्चित कृष्णपियारी,
आनन्दरूपा जय जय राधा ।
अतुलित वैभव शरण-दायिनी, श्रीयमुनातट कुंजगामिनी,
रसिकाराध्या जय जय राधा ॥
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सदा सुसेवित श्रीरासेश्वर,
अमित मञ्जुला जय जय राधा ॥

(४१)

सहज कृपा हो श्रीसर्वेश्वर ।
कालचक्र में समय जात है, षड्‌रिपु घातक निवसत अन्तर ॥
यह नर-जीवन दुर्लभतम है, पार करो प्रभु कृपा-दान कर ।
अतिचञ्चल मन तव सेवा में, श्रद्धायुत हो अविरल तत्पर ॥
श्रीहरिचर्या कर्मनिरत तन, अभिवांछत हम परम निरन्तर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रतिपल मन में वसो रसेश्वर ॥

(४२)

भगवत--सेवा करो निरन्तर ।
नित सेवा अति प्रमुदित होकर, तुरत कृपा हो श्रीसर्वेश्वर ॥
अपने मन को भव बन्धन से, तुरत दूरकर प्रभु भज अन्तर ।
पल-पल नाना चिन्तन कर-कर, वृथा समय को खोवे क्यों कर ॥
रे अविवेकी थोडा सोचो, काल सुनिश्चय काटत चक्कर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह प्रभु--सेवा पावन अवसर ॥

(४३)

शरण परो झट श्रीसर्वेश्वर ।
वे हैं परमकृपा-रससागर, तुरत निवारत बाधा-चक्कर ॥
जीवन रसमय सहज होत है, अविचल भजले श्रीहरि भयहर ।
श्रीवृन्दावन कुञ्जविहारी, राधामाधव अतिकरुणाकर ॥
सरस-भक्ति रत इनका चिन्तन, निज मानस नित करो निरन्तर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, नित अभिलाषी दर्शन गिरिधर ॥

(४४)

गोपी घर घुस गये सखा संग कान है ।
ऐसो व्रज--छलिया चतुर--मतिमान है ॥
माखन-मटकी फोडी श्रीप्रभु, सुन्दर माखन मिलकर खायो,
मर्कटवत सब फुदकर कर, पय पीयो मुख दधि लपटायो ।
व्रज कुंजविहारी श्रीनटनागर, बाल--केलि रस खान है ॥

दै-दै गाली भोलीभाली, व्रज ग्वालिन नहि तन-परिज्ञान है,
धावत गोपी आई निज घर, ले लकुटी कर हरि-ध्यान है ।
कृष्णमुरारी श्रीगिरिधारी, कर--माखन अभिधान है ॥
देखी गोपी श्रीनन्दलाला, भागे झटपट लै दधि सत्वर,
श्रीहरि की यह लीला मोहक, दरश हित आये विधि-शिव-किन्नर ।
वंशीमोहन सकलविमोहन, पीताम्बर परिधान है ॥
नटखट माधव श्रीसर्वेश्वर, रूपनिलय रससार सुधाकर,
नाचन लागे श्रीब्रह्माजी, शंकर ताण्डव करने तत्पर ।
सतत सुशोभित वनकुंजों में, व्रज--रक्षण अवधान है ॥
अतिशय शोभा व्रजकुंजों की, श्रीयमुना--तट शोभित तरुवर,
पुलिनविहारी रससंचारी, व्रजवनवारी श्रीमुरलीधर ।
व्रजवनिता सब तन्मय होकर, जय उच्चरती भर--तान है ॥
श्रीव्रजधेनु पय बरसाती, गोरस अनुपम मधुर ललाम,
व्रजरज पावन सखि-मन भावन, अवलुण्ठित हैं हरि अविराम ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, करते जगत विधान है ॥

(४५)

राधामाधव राधामाधव, शोभा अतिशय प्यारी ।
दूर--दूर से भावुक जनता, दरशन आतुर भारी ॥
सुभग मनोरथ करती अपना, जय--जय शबद उचारी ।
मधुर साज सब लेकर आती, नाचत--गावत न्यारी ॥

हरषित होकर उछल--कूदती, देती निज--कर तारी ।
रंग--बिरंगी फूल--पखुरियाँ, बरषा करत महारी ॥
रसिक भक्तजन अतिशय प्रमुदित, नाचत सब नर--नारी ।
ऋषि-मुनि-बुधजन अति पुलकित मन,गावत सुभग अपारी ॥
थेई--थेई कर-कर नाचत गुणिजन, अति आनद उमगारी ।
अगणित सुरगण राधामाधव, छवि पर सब बलिहारी ॥
आवो--आवो हम भी मिलकर, गावैं युगलविहारी ।
राधासर्वेश्वर शरणागत, व्रज--वसुधा संचारी ॥

(४६)

श्रीसर्वेश्वर दरश मनोहर ।
युगलरूप वपु आप विराजो, सखिजन सेवित श्रीरसिकेश्वर ॥
कृपाधाम प्रिय मंगलकारी, रुचिर माधुरी दरशन शुभकर ।
व्रज-वृन्दावन-कुंज सुशोभित, विहरत यमुना--वंशीवटतर ॥
ललित मालती माल विभूषित, कोमल मंजुल कमल कुसुम कर ।
राधासर्वेश्वर शरणागत, राजत राधाकृष्ण युगलवर ॥

(४७)

चलो रे चलो श्रीव्रज--वृन्दावन ।
अनुपम शोभा सुभग द्रुमावलि, यमुना दरशन सरस कुज घन ॥
कोकिल कुहु-कुहु करत निरन्तर, मधुकर गुंजन रसिक हृदयधन ।
व्रजरज लुण्ठित सुर-नर-मुनिवर, जय जय उचरत भावुक बुधजन ॥

वन-वन विहरत राधामाधव, सखिमण्डल बिच अति हरषित मन ।
राधासर्वेश्वर शरणागत, अतिशय पावन व्रजरज कन-कन ॥

(४८)

श्रीयमुना जल अतिशय पावन ।
वृन्दावन शुभ अवनि वहत नित, भानुसुता जल अति मन भावन ॥
श्यामा श्याम युगलवर जोरी, विहरत सखि सह रसिक रसावन ।
जो जन प्रतिदिन श्रीयमुनाजल, सेवन करत दुरित नशावन ॥
सकल देवगण भूतल आकर, रविजा दर्शन कर पुलकावन ।
राधासर्वेश्वर शरणागत, श्रीयमुनोदक सुख सरसावन ॥

(४९)

आवत जावत सावन जलधर ।
बिन बरसत वह श्याम घटा घन, धावत नव नव रूप बनाकर ॥
हरित भूमि पुनि सूखत तरसत, मेघ घटा कब आवत सुन्दर ।
दादुर-मोर-पपीहा देखत, कोकिल व्याकुल बैठी तरुपर ॥
जलचर जल बिनु परम दुखी है, गोधन तृण हित डोलत बर-बर ।
सकल जीव गण वांछत वर्षा, वर्षण करिये इन्द्र-वरुणवर ॥
राधामाधव श्रीसर्वेश्वर, कृपा होत ही बरसे झर झर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रणमत प्रतिपल हरिपद शिरधर ॥

(५०)

श्याम घटा नित अति तरसावे ।
बिन वरषत वह आवत धावत, तरसत प्राणी हिय दुख पावे ॥

भानु तपन अति तापित धरणी,, मेघ घटा नभ पुनि पुनि आवे ।
अनुभव होवत वर्षा निश्चय, पवन चलत ही घन भग जावे ॥
सावन सब मन भावन सूखा, बिन बरषत सब अति अकुलावे ।
यजन करत द्विज मन्त्र जपत हैं, तरु लतिका नित अति कुमुलावे ॥
सरवर सूखत मुरझत पिक मन, केका वाणी नहि सुन पावे ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, कृपा करहु प्रभु द्रुत बरषावे ॥

(५१)

पावस ऋतु यह अतिशय सुन्दर ।
अभिनव अम्बुद माला श्यामल, वरषत पल पल उमडि घुमडि कर ॥
चञ्चल चपला चौंकत चहुँदिशि, झिङ्गुर झङ्कृति गुञ्जत मधुकर ।
दादुर डिम डिम करत मधुर रव, हंस बतक-बक तरतहिं सरवर ॥
मोर मधुर धुनि शुक-पिक-सारस, पुनि २ निनदत मञ्जुल स्वर भर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अवलोकत इन कुञ्ज युगलवर ॥

(५२)

गावत सखियाँ राग मल्हार ।
वरषत बादर रिम झिम सुन्दर, करत युगलवर कुंज विहार ॥
हरित सुभग अति तरुवर शोभा, विविध लतावलि सुमन बहार ।
अलि-तितली-खग इत उत पल पल, पंकज सौरभ लेत रस सार ॥
श्रीवृन्दावन वन वन शोभा, कुंज कुंज प्रिय यमुन जल धार ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सुनत युगलवर राग मल्हार ॥

(५३)

सरस सुभग ऋतु पावस आई ।
सकल गगन घन घटा छटा है, वरषत बूँदनि अति सुखदाई ॥
वसुधा-गिरि-वन विविध लता-तरु, परम प्रफुल्लित सब मन भाई ।
नदी सरोवर जल परिपूरित, जगत जीव मन मति हरषाई ॥
कूजत कोकिल तरुवर डरियन, टिटई-सारिका-मोरनि गाई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, राधामाधव जोरि वन आई ॥

(५४)

छाई आज घटा घन घोर ।
गिरि-वन निर्झर भरि भरि प्रवहत, खगगन हरषित करत शुभशोर ॥
वन्य जीव सब पुलकित हो हो, धावत इत उत उदित रवि भोर ।
कृषक वृन्द नव बीज वपन रत, सन्त भजत हरि सुचित्त विभोर ॥
खेचर जलचर थलचर सब ही, लेत परम सुख अवनि चहुँ ओर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अवलोकत श्रीनन्दकिशोर ॥

(५५)

वरष पडी यह मेघ घटा प्रिय ।
चपला दमकत नवघन गरजत, वरषत अतिशय मुदित सकल हिय ॥
रवि दरशत नहि घन अँधियारी, सावन झूलत युगल प्रियाप्रिय ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, व्रज - वृन्दावन मुदित सखी जिय ॥

(५६)

हरिचरणामृत करो नित पान ।
भवजलनिधि अति सहज हि तरि हैं, ध्रुवपद पावत निश्चय जान ॥

जन्म--जन्म के अतुलित पातक, कष्ट निवारत श्रीभगवान ।
निज-तन-मन सब रहे प्रफुल्लित, कभी न मन में शंक महान ॥
श्रीप्रभु-मन्दिर नियमित जाकर, दर्शन कर मन हरिगुण गान ।
राधासर्वेश्वर शरणागत, प्रतिपल कर नित भगवद्-ध्यान ॥

(५७.)

सर्वेश्वर कृष्ण मुरारी, श्रीव्रजवन कुंजविहारी,
श्रीचरणशरण हम आये, भव--जलधि अति घबराये ।
अब रक्षा करो हमारी, श्रीव्रजवनकुंजविहारी ॥
तव पद--कमल हम ध्यावैं, प्रतिपल हरि गुण गावैं ।
प्रिय दर्शन दो वनवारी, श्रीव्रजवनकुंजविहारी ॥
करुणाकर नाथ निहारो, श्रीचरण परम सहारो ।
श्रीचक्रसुदर्शनधारी, -- श्रीव्रजवनकुंजविहारी ।
हरि आकर विपद नशावो, अभिनव--वपु प्रकटावो ।
धावो सुन टेर हमारी, श्रीव्रजवनकुंजविहारी ॥
शरणागत प्रियजन पोषक हो, भक्त-दुरित परिशोषक हो ।
सर्वेश्वर "शरण" तिहारी, श्रीव्रजवनकुंजविहारी ॥

(५८)

वंशी बजाओ श्याम गिरिधारी, व्रजविपिनविहारी श्रीवनवारी ।
हम व्रजवनिता तव मुरली को, श्रवणातुर हैं कृष्ण मुरारी ॥
देर करो मत हम दुखियारी, वंशी प्रिय धुन लगत अतिप्यारी ॥
निठुर बने क्यों कहाँ छिपे हो, श्रीवृन्दावन--कुंजविहारी ॥
पल२ प्रतिपल लगत अतिभारी, मन-मति व्याकुल सव-विधि हारी।
अब तो बजादो प्रभु मुरली को, दिव्य सुधारस वरषत भारी ॥

अतिशय मञ्जुल मधुर सरस वह, सुनत प्रफुल्लित हम व्रजनारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, वेणु श्रवण हित सर्वस वारी ॥

(५९)

चक्र सुदर्शन निम्बारक हो ।
श्रीहरि आज्ञा पाकर भूतल, प्रकटे श्रुतिमत परिपालक हो ॥
ब्रह्मसूत्र के भाष्य--प्रणेता, राधाकृष्ण प्रभु समुपासक हो ।
शुभ दशश्लोकी अभिनिर्माता, वेदशास्त्रमत सम्पोषक हो ॥
व्रज-वृन्दावन-श्रीगोवर्धन, नीमगाँव तप अभिधारक हो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीसर्वेश्वर--आराधक हो ॥

(६०)

श्रीनिम्बारक जगद्गुरुवर ।
परम कृपामय श्याम सुभग वपु, दिव्य प्रभायुत अतिशय सुन्दर ॥
भाष्य रचा प्रस्थानत्रयी पर, श्रीहरि पार्षद निम्बदिवाकर ।
शरणागतजन भाव प्रपूरक, कुंज-रस-पोषक सतत शान्तिकर ॥
श्रीसर्वेश्वर समुपासक हैं, पराभक्ति--रसदायक प्रियकर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय-जय बोलो निम्बविभाकर ॥

(६१)

नियमानन्द सुशोभित सुन्दर ।
यति रूप में श्रीब्रह्मा को, रवि दिखलायो निम्बवृक्ष पर ॥
भानु-अस्त पर भानु देखकर, विधि मुदित भये प्रभु प्रसाद कर ।
महानिशा लखि विधि चकित भये, नीमगाँव में ब्रह्मा आकर ॥
नाम निम्बारक धर ब्रह्माजी, पुलकित मानस व्रज वसुधा पर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय निम्बारक निम्बदिवाकर ॥

(६२)

श्रीनिम्बारक अरुणकुमार ।
भक्त--मनोरथ परिपूरक हैं, चक्र--सुदर्शन प्रिय अवतार ॥
श्रीहरि--आज्ञा पाकर भूतल, विपुल किया हरि भक्ति प्रचार ।
वैदिक-वैष्णव धर्म-सनातन, परिपालन कर किया प्रसार ॥
निगमागम अरु पुराण शास्त्र का, ज्ञान-दान कर रस-संचार ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, परम जगद्गुरु प्रणति अपार ॥

(६३)

अहो श्याम हम शरण तिहारी, वेणु बजाओ मधुर पियारी।
श्रीहरि-दर्शन वांछत अविरल, भारत--वसुधा सब नर--नारी ॥
गोमाता पर संकट भारी, वह निरन्तर अति दुखियारी ।
क्यों ! छिपते प्रभु गो-पालक हो, बैठे हो निज लोक विहारी ॥
असुर निवारक निज स्वरूप का, परिपालन हो विनय हमारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, हे व्रजजीवन श्रीगिरिधारी ॥

(६४)

आवो २ प्रभु झटपट आवो, दरश दिखावो नाथ वंशी-लकुट-कर।
श्रीराधा सह तुरत पधारो, अवेर करो मत परम दयाकर ॥
धारण कर श्रीचक्रराज को, असुर--शमन हो हे सर्वेश्वर ! ।
निशिदिन आतुर श्रीहरिदर्शन, कृपाधाम श्रीव्रजरसिकेश्वर ॥
धर्म--कर्म का अभिरक्षण हो, श्रीचरणाम्बुज भवसंकटहर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, मंगल--माधव आवो भू--पर ॥

(६५)

राधामोहन--चरण ध्यान धर ।
सतत युगलश्री रूप निहारें, अतिशय मंजुल दिव्य सुधाकर ॥
श्रीमुख--शोभा अति अनुपम है, दृग् अभिवांछत हृदय निरन्तर ।
युगलरूपरससिन्धुसुधाप्रिय, महामधुर वह वरषत कुंजतर ॥
सखिजन जय हो करत मधुर धुनि, परम प्रियाप्रिय ललित युगलवर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, रस सरसावो भावुक--अन्तर ॥

(६६)

देखो देखोरी अली यह, नाचत लाला कुंजगली ।
फिरि-फिरि देखे उझक-उझक कर, श्रीराधावृषभानुलली ॥
सखियाँ परस्पर चर्चा करतीं, कान्ह पियारो रंगरली ।
कमल-गुच्छ को श्रीहरि लेकर, विहरत कुंजन कर--कदली ॥
जुही--मालती चारु चमेली, सुमन--हार धर डग भरली ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीवन छारही नभ--बदली ॥

(६७)

अरी सखी यह देख किशोरी, नाचत गावत अतिशय भोरी ।
प्यारी प्रियतम संग लिये है, नीलाम्बर छवि छाई पिछोरी ॥
दरश सुभग यह केलि-कला है, परम छबीली विलसत होरी ।
रङ्ग-विरङ्गी भर पिचकारी, परस्पर छोडत चित उरझोरी ॥
परम अनूपम मङ्गल शोभा, श्रीवन--कुंजन पावन पोरी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दर्शन कर हिय लेत हिलोरी ॥

(६८)

राम रटत नित जय हनुमान ।
कन्ध सुशोभित कनक-गदा प्रिय, भाल तिलक शुभकृपा निधान॥
हुंकार करत अति भय व्यापत है, भागत निशिचर लै निज प्रान ।
शरणागत निज परिपालक हैं, महामनीषी अति बलवान ॥
धाम-अयोध्या पावन नगरी,-वसुधा विचरत मुदित मतिमान ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीहनुमत नित हो हिय ध्यान ॥

(६९)

अविचल भज श्री जय हनुमन्ता ।
श्रीकर शोभित पर्वत सुन्दर, प्रतिपल रघुवर नाम भजन्ता ॥
सीतामाता ध्यान करत नित, चित्रकूट - वसुधा विचरन्ता ।
तन्मय होकर अवधपुरी में, कीर्तन सीताराम करन्ता ॥
कण्ठ विराजित तुलसीमाला, करमाला श्रीराम जपन्ता ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भजो सतत श्रीजयजयवन्ता ॥

(७०)

श्रीगोमाता नमन हमारा ।
धरणीरूपा लक्ष्मीनिलया, श्रीहरि सेव्या पय--संचारा ॥
कोटि--कोटि सुरगण आधारा, अमितस्वरूपा भय परिहारा ।
श्रीनदनन्दन गोविन्द माधव, परिसेवित हैं रस निर्झारा ॥
अतुलित वैभव सदा प्रदायक, शास्त्र निरूपित भव--निस्तारा ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सदा प्रपूज्या सकल संसारा ॥

(७१)

राधा राधा नाम उचारो ।
कृपामयी श्रीराधा रसदा, कुंजकिशोरी सेवा धारो ॥
श्रीहरि माधव राधा राधा, जाप करत नित हिय न विसारो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, नाम जपो शुभ नयन निहारो ॥

(७२)

राधा राधा प्रतिपल रटिये ।
निज रसना यह नाम रटत ही, रस वर्षत नित वह नहि घटिये ॥
अनुपम रसमय अति सुखकारी, है गुणकारी चित्त न हटिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, नाम उचारो कभी न नटिये ॥

(७३)

शरण शरण हैं श्रीसर्वेश्वर ।
भव वन कण्टक शरण परत हरि, नशत तुरत ही शरण जन किंकर ॥
सहज कृपामय शरणागत पर, व्रजजन वीथी विहरत सुन्दर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सर्वेश्वर प्रभु श्रीसर्वेश्वर ॥

(७४)

उपास्य प्रभु श्रीसर्वेश्वर भज ।
जगत कामना विविध वासना, परिजन ममता पदलिप्सा तज ॥
सर्वेश्वर भजनीय सदा हैं, ध्यावत अन्तर सुर-किन्नर-अज ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पावत वृन्दावन वसुधा रज ॥

(७५)

चलो चलें वृन्दावन धाम ।
बहत जहाँ जल गभीर धारा, श्रीयमुना की नित अविराम ॥

राधा माधव नव नव लीला, दर्शन अनुपम अति अभिराम ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय जय बोलो राधेश्याम ॥

(७६)

हो हो होरी व्रज वसुधा पर ।
श्रीवरसाना नन्दगाँव में, होरी आई गली गली तर ॥
भर पिचकारी सखी सहेली, कान नह्वाई गाली दैकर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अबीर छाई सुन्दर तरवर ॥

(७७)

सावन शोभा हिय मन भावन ।
अम्बुद माला चहुँदिशि वरषत, व्रज अवनि प्रिय श्रीवृन्दावन ॥
श्रीराधा अलवेलो माधव, सखी संग प्रभु भीजत कुंजन ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, परम प्रफुल्लित पुलकित तन मन ॥

(७८)

आयो सावन सब मन भावन ।
विपिन अवनि पर जलधर छाये, अति वरषाये मनहि लुभावन ॥
युगललाल श्री कुंजन ठाडे, सखी यूथ सह सहजहि धावन ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अनुपम सुख यह परम सुपावन ॥

(७९)

वरषत मेहा कुंजन वन वन ।
युगलविहारी भीजत आवत, चहुँदिशि छाई घटा श्याम घन ॥
श्रीवृन्दावन रसमय धरणी, हरित लता तरु प्रमुदित हरि मन ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, कालिन्दी जल अति बहत उफन ॥

(८०)

गावत सखियाँ राग मलार ।
वृन्दाविपिन नव निकुंज वन में, गावत तन्मय वीन अवधार ॥
सरस मधुर अति प्रिय वृन्दावनि, मलार रागनि उदित रस सार ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जलधर वरषत अम्बु अपार ॥

(८१)

व्रज वन वरषत नभ घन छाये ।
सब ही लता तरु सुरभित कुसुमित, श्रीयुगल लाल अति हरषाये ॥
मोर पपीहा कोकिल कूजत, चमकत चँपला खग कुल धाये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, व्रज छवि दर्शन मन अकुलाये ॥

(८२)

अद्भुत शोभा वृन्दावन की ।
विविध लता तरु वर हरियाली, सुमन सुगन्धित छवि नभ घन की ॥
शुक-पिक-चातक-मोर-सारिका,-खगकुल मंजुल वाणी मन की ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रवहत यमुना युगल चरन की ॥

(८३)

झूलत झूला रासविहारी ।
विपिनराज की मञ्जुल वसुधा, सावन झूलत जय बलिहारी ॥
मन्द-मन्द घन वरषत अद्भुत, कृष्ण झुलावत राधा प्यारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सेवा अभिरत सहचरि भारी ॥

(८४)

विहसत झूलत नवलकिशोर ।
तरु तर झूलत युगल प्रियाप्रिय, श्याम घटा घन बोलत मोर ॥

सखी झुलावत युगललाल श्री, होवत चहुँदिशि कोकिल शोर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, विधि-शिव दरशत भाव विभोर ॥

(८५)

रक्षा बन्धन दिवस सुखकारी ।
लै लै सखियाँ रेशम राखी, करहि समर्पित युगलविहारी ॥
जय जय बोलत शोभित निज कर, मधुर मिठाई कञ्चन थारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, आज युगलवर दरश महारी ॥

(८६)

परशुजयन्ती उत्सव घर घर ।
श्रीनिम्बारक पीठ विराजत, परशुरामश्री आचारजवर ॥
जगद्गुरुश्रीशोभा अनुपम, गावत गुणिजन महिमा सुखकर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भनत बधाई नतशिर बुधवर ॥

(८७)

कृष्ण जन्म शुभ सरस बधाई ।
भादौं बदि की अष्टमि आई, प्रकटे मंगल श्याम कन्हाई ॥
नन्द सुनन्द सभी हरषाये, व्रजवनिता सब नाचत आई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, व्रज अवनि चहुँ अति सरसाई ॥

(८८)

अहो आज यह शोभा भारी ।
कृष्ण जयन्ती उत्सव अनुपम, शोभित अतिशय मंगलकारी ॥
पावन भारत वसुधा मंगल, जयति बधाई परम पियारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भजो भजो श्रीकृष्ण मुरारी ॥

(८९)

नन्द महोत्सव है अति सुन्दर ।

व्रज नव वसुधा अति हरषायी, पुलकित लतिका कुसुम सुरभि भर ॥

वजवनिता सब शुभ स्वर गावत, देत बधाई मुख मंगल स्वर ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, आनन्द छायो व्रज भुवि घर घर ॥

(९०)

श्रीवरसाना आज बधाई ।

राधा श्रीवृषभानु नन्दिनी, प्रकटी रसनिधि सुधा बहाई ॥

व्रज गोपीजन मधुर बधाई, लै लै भुवननि हरषित धाई ।

शरण सदा सर्वेश्वर, परम सुभग दिन धूम मचाई ॥

(९१)

श्रीहरि वामन रूप मनोहर ।

छत्र-कमण्डलु पोथी श्रीकर, शोभित अनुपम वामन सुन्दर ॥

भाद्र शुक्ल शुभ सुभग द्वादशी, दिव्य जयन्ती गावत किन्नर ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, आज महोत्सव अनुपम घर घर ॥

(९२)

शरद सुहावनि अनुपम आई ।

अर्ध निशा शशि सुभग चाँदनी, वृन्दावन नव तरु कुसुमाई ॥

अमित सखी सह महारास रस, नाचत मोहन थेई थेई भाई ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, राधा शोभित अनन्त बधाई ॥

(९३)

जय जय श्रीगोवर्धन धारी ।

वेणु बजावत गोधन पूजत, व्रज वसुधा पर कुंजविहारी ॥

कर लकुटी धर व्रज वीथिन मधि, संग सखा विहरत वनवारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय जय व्रज रज निज तन धारी ॥

(९४)

पुलकित पूजो श्रीगिरिराज ।
कार्तिक शुक्ला पतिपद आई, भनत बधाई व्रजालि समाज ॥
व्रजवासी अति हर्षित पूजत, श्रीगोवर्धन सकल मिलि आज ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दिव्य महोत्सव व्रज व्रजराज ॥

(९५)

कुंज कुंज में दर्शन सुन्दर ।
श्रीवृन्दावन धरा धाम पर, युगल लाल की लीला चितहर ॥
रसिक सखीजन तन्मय मानस, रासविहारी सेवा तत्पर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह छवि अनुपम दरश भाव भर ॥

(९६)

भजो भजो श्रीयुगलकिशोर ।
प्रमुदित प्रतिपल विहरत श्रीवन, सखी यूथ सह सुमंगल भोर ॥
मोर-सारिका-कोकिल कलरव, श्रवण मुदित अति लता-तरु ठोर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अन्तर भजिये रसाब्धि विभोर ॥

(९७)

निशिदिन गोविन्द नाम उचारो ।
वे हैं करुणासागर पूरण, ब्रह्म सनातन चित अवधारो ॥
कृपादृष्टि कर शरण उवारत, विपद विदारक व्रजवन वारो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रतिपल गावो अतिशय प्यारो ॥

(९८)

गावो गोविन्द हरे मुरारे ।
राधामोहन श्रीगिरिधारी, कुंजविहारी व्रज रखवारे ॥
मुरलीधर माधव वनमाली, रस रास कलानिधि रास प्रसारे ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सहचरि सेवित कुंज सहारे ॥

(९९)

मोहन मुरली धुनि सरसाई ।
कदम्ब तरु पर शोभित माधव, विहसि विहसि प्रिय वंशी बजाई ॥
गो-गोपी सब हर्षित होकर, पुलकित हो हो आवत धाई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह शुभ शोभा हृदय बसाई ॥

(१००)

गोविन्द माधव भज सुखदाई ।
भव बन्धन तज शरण प्रभू के, आवत ही ध्रुव सुशान्ति आई ॥
मन माधव बस नव रस चाखे, कृपा पाय शुभ अति सरसाई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, राधामाधव छवि दरशाई ॥

(१०१)

व्रज व्रज रे मन श्रीव्रजधाम ।
वा वसुधा पर राधामाधव, शोभित निशिदिन परम ललाम ॥
मंगल रूप विराजत कुंजन, गावत श्रुतियाँ गुणावलि श्याम ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दरश मनोरम लभत अविराम ॥

(१०२)

अद्भुत शुभदिन आयो सजनी ।
प्रिया श्याम नव केलि करत वन, प्रमुदित निज मन भायो सजनी ॥

कदली किसलय व्यजन करहि सखि, भाव अनोखो लायो सजनी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, उत्सव श्रीवन छायो सजनी ॥

(१०३)

श्रीहरि मन्दिर सेवा शुभकर ।
जो जन श्रद्धा भाव सहित नित, श्रीहरि मन्दिर सेवा तत्पर ॥
वह निश्चय ही प्रभु अनुकम्पा,-भाजन होवत विषयन हटकर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह सेवा ध्रुव विकट कष्टहर ॥

(१०४)

सन्त सुधीजन सेवा व्रत हो ।
जिन परिसेवा शुभ फलदायी, निज मन सेवा नित अभिरत हो ॥
सहज भाव से सेवा कारण, दैन्य दयारत कर्म निरत हो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रद्धा सेवा भरित विनत हो ॥

(१०५)

आतुर सेवा परम धर्म है ।
जो जन व्याधि परम ग्रसित हो, सेवा उसकी प्रमुख कर्म है ।
वृद्धजनों अरु आतुर सेवा, सदा निजान्तर शास्त्र मर्म है ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह सेवा व्रत धारण धर्म है ॥

(१०६)

आतुर-बालक वृद्ध जनों की, सेवा अतिशय मंगलकारी ।
गो-सेवा अथ खग-मृग-सेवा, पशु सेवा भवताप निवारी ॥
पूज्य जनों की सेवा शुभकर, गुरु सेवा झट संकट टारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सेवा रत मन अति हितकारी ॥

(१०७)

दर्शन करिये यमुना धारा ।
अति गभीरतम पावन निर्मल, करत मार्जन भव निस्तारा ॥
मीन-मकर अरु मर्कट सोहे, चञ्चल जलचर करत विहारा ।
शरण सदा सर्वेश्वर, वृन्दावन भुवि रस विस्तारा ॥

(१०८)

मोहन मुरली बजती प्यारी ।
कदम्ब शाखा शोभित माधव, मधुर बजावत रस सञ्चारी ॥
सुनत सखीजन आवत मुद मन, सकल मनोरथ सर्वस वारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीवन वन वन बढत हरियारी ॥

(१०९)

व्रज वीथी की शोभा सुन्दर ।
पावन यमुना निर्मल जल भर, कनक कलश लै आवत सखिवर ॥
युगल लाल जय बोलत सहचरि, भाव भरित अति परम मनोहर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, विहरत श्रीहरि वेणु अधर धर ॥

(११०)

चलत फुवारे कुंज सरोवर ।
चहुँदिशि लतिका डरियन छाई, कुसुम सुगन्धी है अति शुभकर ॥
राधामाधव नवल युगलवर, शोभा दरशात मुदित निजान्तर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सरवर तरुवर अतिशय सुन्दर ॥

(१११)

जय निम्बारक तीर्थ सरोवर ।
अति पावन जल निर्मल अनुपम, हरित द्रुमावलि गुञ्जन मधुकर ॥

चातक-कोकिल-मोर-सारिका,-कीर खगादि कलरव बर बर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अवलोकत छवि सुधी मुनीश्वर ॥

(११२)

शोचत शोचत समय जात है ।
तुरत निजान्तर राधामाधव, भजन करहु नित सुखद बात है ॥
क्यों कर इत उत डोलत मानस, जगत वासना महा घात है ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, शरण परो हरि जगत तात है ॥

(११३)

दर्शन करिये शोभा पुष्कर ।
जहाँ विराजत श्रीब्रह्माजी, छवि प्रिय अनुपम सुन्दर गिरि-सर ॥
अति पावन जल सब अघ नाशत, नान करहु नित तीरथ गुरुवर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय जय बोलो मंजुल स्वर भर ॥

(११४)

श्रीसर्वेश्वर भजो निरन्तर ।
भुवन कामना तुरत छोडकर, भजिये श्रीहरि हृदय भाव भर ॥
वे प्रभु अतिशय करुणासागर, कृपा सुनिश्चय शरणागत पर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रिय छवि अनुपम अतिसुन्दरवर ॥



(१)

प्रभातवेला ऊठकर, सर्वेश्वर कर ध्यान ।
सदाचार पालन "शरण", जीवन उत्तम मान ॥

(२)

राधासर्वेश्वर सदा, परम कृपामय पूर्ण ।
शरणागत-पालक "शरण", करत अनुग्रह तूर्ण ॥

(३)

श्रीवृन्दावनधाम में, शोभित श्यामाश्याम ।
नित्य-सखी सेवित "शरण", श्रीनिकुंज अभिराम ॥

(४)

गति-मति-रति-प्रपत्ति नित्य, कृष्णार्पण गुणगान ।
यही भावना "शरण" हो, जीवन रसमय जान ॥

(५)

राधामाधव जपत जो, निश्चय कटत जग-फन्द ।
अविरल रसधारा बहत, "शरण" हृदय आनन्द ॥

(६)

श्रीराधा वृषभानुजा, कृपामयी रसधाम ।
कृष्ण-कलित-वामाङ्ग में, "शरण" अतीव ललाम ॥

(७)

राधा राधा राधिका, रटो हृदय-पट खोल ।
कृपा करेगी स्वामिनी, "शरण" समय अनमोल ॥

(८)

कुंज-कुंज वन-कुंज में, केलि करत घनश्याम ।
श्रीराधा शोभित सदा, "शरण" सुभग अविराम ॥

(९)

श्रीवृन्दावनधाम का, वास भला अतिश्रेष्ठ ।
यमुना दर्शन सुभग रज, "शरण" राधिका-प्रेष्ठ ॥

(१०)

व्रजवनिता सब नित्य हैं, व्रज-गोवर्धन धाम ।
श्रीयमुना नित दरश शुभ, "शरण" भजो निष्काम ॥

(११)

कालिन्दी नव पुलिन पर, लता-कुंज अभिराम ।
राधामोहन श्रीयुगल, विहरत "शरण" अकाम ॥

(१२)

प्रतिपल अपने चित्त में, दैन्यभाव अवधार ।
श्रीसर्वेश्वर शुभ-कृपा, "शरण" शास्त्र का सार ॥

(१३)

अनन्त काल से जीव सब, हरि-माया भव-बन्ध ।
प्रभु शरणागत हो "शरण", कटत व्याधि जग-अन्ध ॥

(१४)

वैष्णवता धारण करै, श्रीतुलसी गल--माल ।
गोपीचन्दन-तिलक हो, "शरण" कटत भव-जाल ॥

(१५)

पुण्य-समय गतिशील है, रट सर्वेश्वर नाम ।
गया समय आवत नहीं, "शरण" जगत तज काम ॥

(१६)

राम-कृषण रसरूप हैं, इनमें कभी न भेद ।
मर्यादा-लीलाधिपति, "शरण" निरूपण वेद ॥

(१७)

दशरथनन्दन राम हैं, नन्दनन्दन श्रीकृषण ।
इन श्रीयुगल-चरण "शरण", प्रतिपल परत सतृष्ण ॥

(१८)

दीप-दान तुलसी परक, प्रतिदिन मंगल-धूप ।
परिक्रमा-तुलसी "शरण", व्याधि-शमन भव-कूप ॥

(१९)

दुर्लभ नर तन प्राप्त कर, श्रीहरि-विमुख अज्ञान ।
कालचक्र मंडरात है, "शरण" सतत अवधान ॥

(२०)

जो नर प्रतिपल अहं में, रहता है अति चूर ।
वह नर निशिचर रूप है, "शरण" अहं से दूर ॥

(२१)

मनमुखी जो सद्‌गुरु बनै, करै शिष्य उपदेश ।
सकल शास्त्र विपरीत है, "शरण" शास्त्र-निर्देश ॥

(२२)

वेद-विहित शुभ सम्प्रदाय, तदनुकूल अतिश्रेष्ठ ।
वही वरणीय परम गुरु, "शरण" सातिशय प्रेष्ठ ॥

(२३)

कपट प्रदर्शन कार्य को, करता जो अतिधूर्त ।
सञ्चित किञ्चित भोग कर, "शरण" प्रयान-मुहूर्त ॥

(२४)

इत-उत भटकत व्यर्थ में, अति आडम्बर देख ।
यह श्रेयस्कर है नहीं, "शरण" आप्त - उल्लेख ॥

(२५)

कृत्रिम गुरु-आचार्य जो, बनते श्रीभगवान ।
ऐसे छद्मी मनुज से, "शरण" सुदूर निदान ॥

(२६)

यह विचित्र संसार है, करते नित उपदेश ।
स्वयं पडे अज्ञान में, "शरण" उचित सन्देश ॥

(२७)

सम्प्रदाय दृढ़ निष्ठ हो, निज उपास्य का ध्यान ।
तिलक-कण्ठी धारण सदा, "शरण" सुवैष्णव जान ॥

(२८)

कवच सुदर्शन पाठ कर, गोपाल मन्त्र का जाप ।
श्रीसर्वेश्वर मुदित हो, "शरण" शमन सब ताप ॥

(२९)

चक्र-सुदर्शन यन्त्र को, जो धारत मतिमान ।
उसके सकल अरिष्ट-अघ, "शरण" शमन ध्रुव जान ॥

(३०)

यह मन चञ्चल चपलगति, विचरत इस जग माहि ।
श्रीहरि मंगल ध्यान धर, "शरण" अचल हो जाहि ॥

(३१)

अतुलित वैभव प्राप्त कर, प्रभु न भजा अज्ञान ।
यह शुभ जीवन जात है, "शरण" भजो भगवान ॥

(३२)

आज भजें पुनि कल भजें, राधामाधव रूप ।
यह सोचत दुर्लभ समय, "शरण" बहत भव-कूप ॥

(३३)

सोचत-सोचत सोगये, नहि कर्तव्य सुबोध ।
सावधान हरि को भजो, "शरण" शास्त्र का शोध ॥

(३४)

कालचक्र अति प्रबल है, करता सबको लीन ।
राजा-योगी-रंक सब, "शरण" काल-आधीन ॥

(३५)

भागवत-गीता-पठन हो, रामायण-शुभज्ञान ।
सत्सङ्गति-शिक्षा भली, "शरण" परो भगवान ॥

(३६)

नाना मादक--द्रव्य का, सदा करो परिहार ।
इससे जीवन सुभग हो, "शरण" हृदय अवधार ॥

(३७)

सतरंज--चोपड--तास के, खेल अनेक विकार ।
समय व्यर्थ में नष्ट हो, "शरण" कलह संचार ॥

(३८)

सुलफा-गांजा-अफीम-विष, मद्य-मांस परित्याग ।
अंडा-मछली हेय सब, "शरण" कथन पर जाग ॥

(३९)

जर्दा-बीड़ी-सिगरेट,--तमाखू घातक सिद्ध ।
धूम्रपान वर्जित सदा, "शरण" शास्त्र-प्रसिद्ध ॥

(४०)

गुटका आदि अखाद्य है, विविध पेय को छोड ।
केंसर आदिक रोग सब, प्रकट "शरण" मन मोड ॥

(४१)

साधु-विप्र शुभ गोसेवा, श्रीहरि-अर्चन ध्यान ।
पितृभक्त हो हरि-मन्दिर, "शरण" सुरक्षण-ज्ञान ॥

(४२)

नाना घातक तत्त्व हैं, सदा रहो अवधान ।
वैदिक--सनातनधर्म में, "शरण" निरत तज मान ॥

(४३)

सद्-गृहस्थ का धर्म है, करै अर्थ का दान ।
श्रीहरिसेवा-साधुजन, "शरण" अतिथि सम्मान ।।

(४४)

वह गृहस्थ अति उत्तम है, करै अर्थ विनियोग ।
दीन-दुखी अरु सन्त हित, "शरण" सही उपयोग ।।

(४५)

अति धन संग्रह हानिकर, करता सकल विनाश ।
वापी-कूप-तडाग-हरि,--सेवा "शरण" प्रकाश ।।

(४६)

लोभवृत्ति को त्यागकर, करो अर्थ का दान ।
चौगुन अर्थ बढ़ै पुनि, "शरण" संदेश महान ।।

(४७)

जो जन करता लोभ है, पाता वह अति कष्ट ।
इहत्र--परत्र अति हानि, "शरण" व्यर्थ में नष्ट ।।

(४८)

काम, क्रोध, अथ लोभ-मोह, मद-मात्सर्य महान ।
इन षड्‌रिपु अति सावधान, "शरण" वही गुणवान ।।

(४९)

गेह--आसक्ति त्यागकर, जो भजता भगवान ।
वह मानव अति स्तुत्य है, "शरण" परम मतिमान ।।

(५०)

जोर-जोर से जो बके, करता व्यर्थ विवाद ।
वह मनुज अति निन्दनीय, "शरण" सिद्ध श्रुतिवाद ॥

(५१)

अपने मन की जो करै, ना मानैं शुभ बात ।
वह निरन्तर दुखी रहे, "शरण" उसी की मात ॥

(५२)

शुभ समय अति मूल्यवान, वृथा इसे मत खोय ।
बीता समय आवत नहीं, "शरण" समय संजोय ॥

(५३)

सुपाच्य सात्त्विक भोजन हो, कूपोदक का पान ।
समुचित भ्रमण-व्यायाम-श्रम, "शरण" स्वस्थ वह जान ॥

(५४)

मातृ-भक्ति शुभ धर्म है, पितृ-भक्ति अनिवार्य ।
श्रीगुरु-भक्ति परम धर्म, "शरण" सुमंगल कार्य ॥

(५५)

तन पवित्र मन पवित्र हो, संयम-सत्य विचार ।
सद्-ग्रन्थों का पठन नित्य, "शरण" सुभग प्रचार ॥

(५६)

गोविन्द-गोपाल-कृष्ण भज, मुरलिमनोहर-श्याम ।
राधामाधव भज "शरण", सर्वेश्वर--घनश्याम ॥

(५७)

द्रुतगति वाहन-चालक का, शुभ कर्तव्य महान ।
मद्यादि मदप्रद सभी, तज दो "शरण" समान ॥

(५८)

मानव-मर्कट-मोर-मृग,--गो-वृषभ अति ध्यान ।
राजपथ गन्तव्य-काल, चालक "शरण" विधान ॥

(५९)

जीवमात्र का ध्यान हो, वाहन-गति कुछ मन्द ।
दुर्घटना से बच रहो, "शरण" तभी आनन्द ॥

(६०)

छात्र--मात्र का कर्म है, ऊठै नित्य प्रभात ।
सर्वेश्वर चिन्तन करै, "शरण" शास्त्र की बात ॥

(६१)

मात--पिता वन्दन करै, श्रीगुरु करै प्रणाम ।
सदाचार पालन करै, "शरण" छात्र का काम ॥

(६२)

आवश्यक स्वाध्याय कार्य, श्रीगुरुसेवा धर्म ।
समुचित हो व्यायाम-श्रम, "शरण" छात्र सत्कर्म ॥

(६३)

मिद्-भाषी अति नम्र हो, परम सुशील स्वभाव ।
तन-वसन-मन शुद्धता, "शरण" छात्र सद्भाव ॥

(६४)

गुरुजन आज्ञा--अनुपालक, अतिथि--सेवा दक्ष ।
सच्चरित्र शुभकर्मरत, "शरण" छात्र अभिरक्ष ॥

(६५)

जो मानव श्रुति-शास्त्र से, शिक्षा पावै दिव्य ।
उसका जीवन सुभग है, "शरण" शान्तिमय भव्य ॥

(६६)

शुद्ध-सात्विक भोजन का, करता जो व्यवहार ।
वह निरोग अति स्वस्थ है, "शरण" रोग परिहार ॥

(६७)

सकल शास्त्र का सार यह, भजले राधेश्याम ।
इससे जीवन सफल है, "शरण" रटो हरिनाम ॥

(६८)

सत्साहित्य का मनन हो, दुर्व्यसनों का त्याग ।
सन्त-दरश-श्रीहरिकथा, "शरण" तभी सद्भाग ॥

(६९)

गीता--रामायण तथा, श्रीमद्भागवत पाठ ।
नियमित इनका स्वाध्याय, "शरण" सुमंगल ठाठ ॥

(७०)

मुरलीधर ! निज मुरली को, लेकर प्रकटो नाथ ।
देर करो मत करुणार्णव, "शरण" राधिका साथ ॥

(७१)

सनकादिक सेवित सदा, श्रीसर्वेश्वर ध्यान ।
प्रतिपल उनका स्मरण हो, "शरण" कृपा भगवान ॥

(७२)

राधासर्वेश्वर - भजन, चरण-अनन्य-अनुराग ।
तभी मनुजतन सफल हैं, "शरण" यही शुभ भाग ॥

(७३)

श्रीवृन्दावन अवनि पर, विहरत श्यामा - श्याम ।
कुंज-कुंज प्रति कुंज मधि, "शरण" कुंज-वन धाम ॥

(७४)

श्रीव्रजमण्डल धाम में, विहरत राधाकृष्ण ।
सखी-सुसेवित नित्य हैं, "शरण" दरश सतृष्ण ॥

(७५)

पावन यमुना सुभग तट, वंशीवट श्रीश्याम ।
श्रीराधा-युत सखी सह, "शरण" दरश श्रीधाम ॥

(७६)

वरसाना - नदगाँव के, दर्शन अनुपम होय ।
श्रद्धायुत रस भक्ति से, "शरण" चलो सब कोय ॥

(७७)

श्रीगोवर्धन - विपिन में, शोभित निम्बग्राम ।
निम्बारक भगवान के, "शरण" शरण निष्काम ॥

(७८)

अतुलित वैभव त्याग कर, श्रीवन करत निवास ।
श्रेष्ठ-रसिकवर-सन्तजन, "शरण" दरश हरिदास ॥

(७८)

श्वास-श्वास प्रतिश्वास में, राधाकृष्ण प्रिय नाम ।
यावज्जीवन अनवरत, "शरण" जपो शुभ काम ॥

(७९)

गया श्वास आवत नहीं, नर तन दुर्लभ जान ।
वही मनुज मतिमान है, "शरण" जपो भगवान ॥

(८०)

खेल-खेल में भूल गये, आवश्यक हरिनाम ।
सावधान मनसा सदा, "शरण" भजो निष्काम ॥

(८१)

बूँद-बूँद संग्रह हुआ, भर गये कलश अपार ।
एवं हरि--नाम जपत हि, "शरण" भक्ति संचार ॥

(८२)

चञ्चल मन निग्रह परक, होवे श्रीप्रभु ध्यान ।
वह जीवन अतिश्रेष्ठ है, "शरण" परम अवधान ॥

(८३)

भ्रामरी--मुद्रा से जपे, राधा--राधा नाम ।
कृपा पूर्वक तुरत देत, "शरण" दरश घनश्याम ॥

(८४)

अपनी मति को प्रभु परक, जो करता प्रिय भक्त ।
उसका जीवन सफल है, "शरण" प्रभू--अनुरक्त ॥

(८५)

राधा--राधा जपत जो, श्रद्धापूर्वक नित्य ।
कृपाधीश्वरी राधिका, "शरण" कृपा औचित्य ॥

(८६)

अपने मन को जो·करै, सर्वेश्वर अनुरक्त ।
विलसत सर्वेश्वरप्रभू, "शरण" कृपा प्रिय भक्त ॥

(८७)

समय सहज में अनवरत, जावत फिर नहि आय ।
वही मनुज अति कुशल है, "शरण" हरि गुण गाय ॥

(८८)

वृन्दावन श्रीकुञ्ज में, विहरत युगलकिशोर ।
नित्य सिद्धा सहचरी, "शरण" सुसेवित भोर ॥

(८९)

गोवर्धन श्रीमानसी,--गंगा दर्शन दिव्य ।
किलोल कंड का दरश शुभ, "शरण" अतीव भव्य ॥

(९०)

चरण--शरण प्रभु के परो, यह जीवन सुख सार ।
तभी स्वजीवन शान्तिमय, "शरण" नशत भव भार ॥

(९१)

श्रीप्रभु अर्चा जो करे, फल पावैं सुख--शान्ति ।
अविचल सरस भक्ति से, "शरण" कभी न भ्रान्ति ॥

(९२)

आधुनिक पाश्चात्य खेल, क्रिकेटादि बहु जान ।
ये सब हिकारी नहीं, "शरण" सतर्क महान ॥

(९३)

पाश्चात्य यात्रा अहितकर, प्रत्यन्त गमन निषेध ।
भारत वसुधा तीर्थ का, "शरण" सुसेवन सेध ॥

(९४)

दैन्य भाव को धार कर, भजो निरन्तर श्याम ।
अतुलित शान्ति जीवन में, "शरण" लसहि अविराम ॥

(९५)

वाणी रस माधुर्य हो, वाणी संयमशील ।
वाणी हितकारी रहै, "शरण" वही गुणशील ॥

(९६)

सदाचरण सतचारित्र्य, अविरल शुभ संस्कार ।
यही मनुज जिनरूपता, "शरण" शास्त्र मत धार ॥

(९७)

कटु भाषण हितकर नहीं, उचित मधुर व्यवहार ।
सत्य वचन अवपालना, "शरण" श्रौत मत सार ॥

(९८)

पदलोलुपता अहंता, याचक वृत्ति स्वभाव ।
पद पद पर आक्रोशता, "शरण" त्याज्य यह भाव ॥

(९९)

भला करो सब जीव का, भला करो सब कार्य ।
कथनी करनी अति भली, "शरण" यही अनिवार्य ॥

(१००)

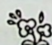
सद्-विद्या अर्जित भली, अर्जित पावन ज्ञान ।
श्रीहरि भक्ति भली सदा, "शरण" करो हिय ध्यान ॥

(१०१)

सस्वर वेद सुघोष हो, पञ्चगव्य का पान ।
पञ्चामृत सेवन सुभग, "शरण" उदय अवभान ॥

श्रीसर्वेश्वर - राधामाधव - संकीर्तन

१-राधा रसेश्वर वृन्दावनेश, श्रीकृष्ण सर्वेश्वर देव--देव ।
२-जय राधामाधव श्रीसर्वेश्वर, राधेकृष्ण राधेश्याम रासरसेश्वर ।
३-राधाकृष्ण रट कुञ्जविहारी, भज सर्वेश्वर रस-संचारी ।
४-राधामाधव श्रीसर्वेश्वर, परम मनोहर व्रजरसिकेश्वर ।
५-जय सनकादिक जय सर्वेश्वर, जय-जय२ हो व्रजविपिनेश्वर ।
६-जय वृन्दावन जय सर्वेश्वर, जय सनकादिक-निम्बविभाकर ।



श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्रचूडामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित -



जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज का जन्म विक्रम संवत् 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। आपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर आचार्य पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। व्रजविदेही चतुः सम्प्रदाय श्रीमहान्त श्रीधनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतुःसम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त-महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों, श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं,

राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में श्रीनिम्बार्काचार्य स्पेशल ट्रेन द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार, (वृन्दावन) उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकशः श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाय को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता रहा है। इसी प्रकार सं. 2026 में व्रजयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ. भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन, श्रीरासलीलानुकरण, श्रीरामलीला आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-सञ्चालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया था। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं, आप द्वारा रचित ३५ ग्रन्थ हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आपश्री निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषतः उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।

Printed at : Print 'O' Land, Jaipur • 2212694